श्री बजरंग बाण

विधि सहित

॥ श्री बजरंग बाण ॥

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमंत संत हितकारी । सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
जन के काज विलम्ब न कीजै । आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥

जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा । सुरसा बद पैठि विस्तारा ॥
आगे जाई लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुर लोका ॥

जाय विभीषण को सुख दीन्हा । सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥बाग उजारी
सिंधु महं बोरा । अति आतुर यम कातर तोरा ॥

अक्षय कुमार मारि संहारा । लूम लपेट लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई । जय जय धुनि सुर पुर महं भई ॥

अब विलम्ब केहि कारण स्वामी । कृपा करहु उर अन्तर्यामी ॥
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता । आतुर होय दुख हरहु निपाता ॥

जै गिरिधर जै जै सुखसागर । सुर समूह समरथ भटनागर ॥
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले। बैरिहिं मारू बज्र की कीले ॥

गदा बज्र लै बैरिहिं मारो । महाराज प्रभु दास उबारो ॥
ॐ कार हुंकार महाप्रभु धावो । बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा । ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा ॥
सत्य होहु हरि शपथ पाय के । रामदूत धरु मारु धाय के ॥

जय जय जय हनुमंत अगाधा । दुःख पावत जन केहि अपराधा ॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत कछु दास तुम्हारा ॥

वन उपवन, मग गिरि गृह माहीं । तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥
पांय परों कर जोरि मनावौं । यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥

जय अंजनि कुमार बलवन्ता । शंकर सुवन वीर हनुमंता ॥
बदन कराल काल कुल घालक । राम सहाय सदा प्रति पालक ॥

भूत प्रेत पिशाच निशाचर । अग्नि बेताल काल मारी मर ॥
इन्हें मारु तोहिं शपथ राम की । राखु नाथ मरजाद नाम की ॥

जनकसुता हरि दास कहावौ । ताकी शपथ विलम्ब न लावो ॥
जय जय जय धुनि होत अकाशा । सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा ॥

चरण शरण कर जोरि मनावौ । यहि अवसर अब केहि गौहरावौं ॥
उठु उठु चलु तोहिं राम दुहाई । पांय परौं कर जोरि मनाई ॥

CHALISA.NET.IN

ॐ चं चं चं चं चपल चलंता । ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ॥
ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल । ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ॥

अपने जन को तुरत उबारो । सुमिरत होय आनन्द हमारो ॥
यह बजरंग बाण जेहि मारै । ताहि कहो फिर कौन उबारै ॥

पाठ करै बजरंग बाण की । हनुमत रक्षा करैं प्राण की ॥
यह बजरंग बाण जो जापै । तेहि ते भूत प्रेत सब कांपे ॥
धूप देय अरु जपै हमेशा । ताके तन नहिं रहै कलेशा ॥

॥ दोहा ॥

प्रेम प्रतीतहि कपि भजै, सदा धरैं उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान।।

CHALISA.IN

• जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •

बजरंग बाण पाठ की विधि

भगवान हनुमान प्रभु श्री राम के परम् भक्त हैं, इसलिए बजरंग बाण में मुख्य रूप से भगवान् राम की भी सौगंध के लिए कुछ पंक्तियां दी गयी है। ऐसा माना जाता है कि जब भी आप श्री राम का सौगंध लेंगें, तो हनुमान जी आपकी मदद अवश्य करेंगे। इसलिए पाठ में इन पक्तियों के अवश्य पढ़ना चाहिए। इस प्रकार हैं प्रभु श्रीराम की सौंगध की पंक्तियां

भूत प्रेत पिशाच निसाचर। अगिन बेताल काल मारी मर
इन्हें मारु, तोहिं सपथ राम की। राखु नाथ मर्याद नाम की।
जनक सुता हरि दास कहावौ। ताकी सपथ विलम्ब न लावौ।
उठु उठु चलु तोहिं राम दोहाई। पाँय परौं कर जोरि मनाई।।
बजरंग बाण पाठ मंगलवार से आरंभ करना चाहिए।

- मंगलवार के दिन सूर्योदय से पूर्व उठकर स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
- पूजा स्थान पर भगवान हनुमान जी की मूर्ति स्थापित करें।
- भगवान गणेश सभी देवों में प्रथम पूजनीय हैं। इसलिए बजरंग बाण का आरंभ करते समय सर्वप्रथम गणेश जी की आराधना करें।
- इसके बाद भगवान राम और माता सीता का ध्यान करें।
- उसके बाद हमुमान जी को प्रणाम करके बजरंग बाण के पाठ का संकल्प लें।
- हनुमान जी को फूल अर्पित करें और उनके समक्ष धूप, दीप जलाएं।कुश से बना आसन बिछाएं और उसपर बैठकर बजरंग बाण का पाठ आरंभ करें।
- पाठ पूर्ण हो जाने के बाद भगवान राम का स्मरण और कीर्तन करें।
- हनुमान जी को प्रसाद के रूप में चूरमा, लड्डू और अन्य मौसमी फल आदि अर्पित कर सकते हैं।

CEMCA.ORG.IN

• जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम • जय श्री राम •